राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी जिलों में खेजड़ी वृक्ष की मर्त्यता के कारण एवं प्रबंधन

खेजड़ी वृक्ष की मर्त्यता एवं सूखने के कारण

1. राजस्थान का राज्य वृक्ष (प्रोसोपिस सिनेरिया) सामान्यतः खेजड़ी के नाम से जाना जाता है। खेजड़ी से जाना जाता है।

2. खेजड़ी वृक्षों कि मर्त्यता में दिन-प्रतिदिन की बढ़त हो रही है, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान से यह पता लगाया कि जैविक कारकों के साथ-साथ अजैविक कारकों की भूमिका भी खेजड़ी के विनाश में अहम भूमिका निभाती है।

3. जैविक कारकों में मुख्य भूमिका कवक (*Ganoderma luciduum*) एवं जड़ भेदी कीट (*Acanthophoru serraticorinis*) की है। कवक रूट रौट नामक बीमारी का कारक है जोकि जड़ को गला देती है एवं जड़ भेदक कीटों की लटें जड़ों को पूर्ण रूप से खोखला कर देता है।

4. इसके अलावा कृषि की परंपरागत प्रक्रिया में बदलाव जैसे ट्रैक्टर द्वारा खेतों की जुताई एवं ट्यूबवेल द्वारा फसलों की सिचाई भी मर्त्यता में अहम भूमिका निभाते है।

खेजड़ी विनाश का प्रबंधन

पिछले दस वषों में किए गए शोधो में आफरी के द्वारा किसानों के लिए समग्र तकनीक (packge of practicè) का विकास किया गया है जिसमें कि खेजड़ी वृक्षों में लगने वाली बीमारी और कीडों दोनो का प्रबंधन किया जा सके।

- छंगाई में एक वर्ष का अंतराल तथा सिर्फ दो तिहाई लूंग की छंगाई की जाए।
- पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त पेड़ों को जड़ सहित नष्ट कर दिया जाए ताकि आगे संक्रमण ना फैल सके।
- पेड़ों के आस पास 5 फीट परिधि का थावला बनाकर बाविस्टीन (1 मि. ग्रा. प्रति ली.) का घोल 20 लीटर प्रति वृक्ष से मृदा का उपचार किया जाना चाहिए। यह उपचार हर छः महीने के अंतासन पर 5 से 6 बार किया जाना चाहिये।

कृषि वानिकी विस्तार प्रभाग

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

कोडिनेरेड खेजड़ी प्रोजेक्ट

वित्त वर्ष 2011-12 एक्स्टेशन नार्मल

प्रकाशक : डॉ. टी. एस. राठौड़ (निदेशक आफरी)